सामुदायिक रेडियो स्टेशन की दिक्कतें

फ्रेडरिक नरोन्हा

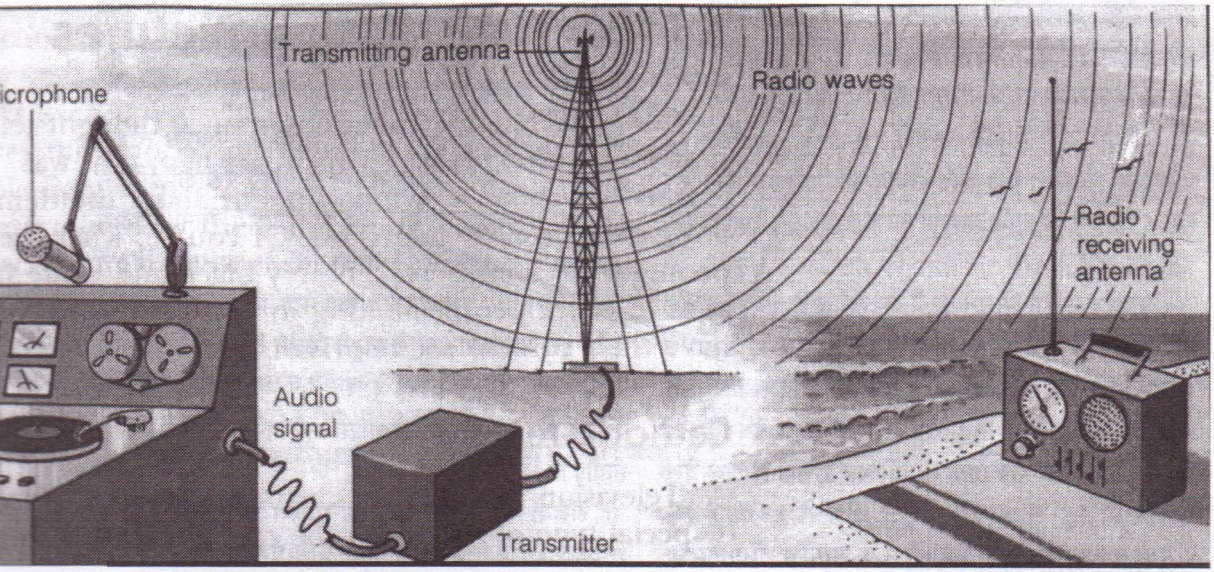

सामुदायिक रेडियो स्टेशनों से किसी आमदनी की उम्मीद न करें। फिर भी इन्हें लगाना लाभदायक है क्योंकि इनसे ऐसे लोगों को थोड़ी ताकत और बोलने की क्षमता मिलेगी जिनकी आवाज़ आज तक दबी हुई थी।

इस वर्ष के शुरू में केंद्र सरकार ने यह सम्भावना सामने रखी कि शिक्षा संस्थान अपना एफ.एम. रेडियो स्टेशन स्थापित कर सकते हैं। यह रेडियो स्टेशन मुनाफे के लिए नहीं होना चाहिए और इससे खबरों का प्रसारण नहीं किया जा सकेगा। वैसे तो इसे सामुदायिक रेडियो कहा गया है मगर ऐसे रेडियो स्टेशन लगाने की पात्रता मात्र शिक्षा संस्थानों को होगी।

दक्षिण एशिया में, जहां साक्षरता दर कम है और गरीबी तथा क्षेत्रीय विविधता काफी अधिक है, वहां रेडियो एक उपयोगी टेक्नॉलॉजी साबित हो सकता है। खास तौर से भाषागत विविधता के मद्देनज़र तो रेडियो काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। युनेस्को के एशिया क्षेत्र के संचार सलाहकार विजयानंद जयवीरा कहते हैं, "आपको एक पोर्टेबल रेडियो स्टेशन ढाई लाख रुपए में मिल जाएगा। पड़ोसी नेपाल में तो लुम्बिनी रेडियो जैसी सहकारी समितियां भी रेडियो स्टेशन चलाती हैं और मदनपोकरा में रेडियो स्टेशन का संचालन नगर पालिका करती है।"

अपनी आवाज़ को हवाओं में बिखेरने की कम से कम लागत कितनी होगी? बताते हैं कि यह लागत मात्र 100 रुपए तक हो सकती है। वेबसाइट http://www.radiophony.com पर आपको एक संचार केंद्र का ब्यौरा मिल जाएगा जिसे 100 रुपए में बनाया जा सकता है। इंजीनियर विक्रम कृष्णा कहते हैं कि यह सब सामान लेकर संचार केंद्र का निर्माण आपको खुद करना होगा। इस 100 रुपए में रिकॉर्डिंग की लागत शामिल नहीं है। मगर यह सही है कि भारत के कई इलेक्ट्रॉनिक बाज़ारों में रिकॉर्डिंग के भी काफी सस्ते विकल्प मिल जाएंगे।

यदि आप किसी रेडियो स्टेशन से पैसा कमाना चाहें, तो उसकी लागत ज़्यादा होती है। विक्रम कृष्णा के अनुसार ऐसे रेडियो स्टेशनों को ट्रांसमीटर, एन्टेना, रिकॉर्डर, माइक्रोफोन्स, संपादन के साधन, स्टूडियो, लायब्रेरी, मेनेजरों, प्रोड्यूसरों, एन्कर्स, बिक्री विशेषज्ञों वगैरह कई चीज़ों की